Lecturer (Rog Nidana) Paper-II (S.A.T.)

Time Allowed: 03 Hours | निर्धारित समय: 03 घंटे

Maximum Marks: 120 | अधिकतम अंक: 120

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

प्रश्न पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions.

उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को कृपया सावधानीपूर्वक पढ़ें ।

1. There are **EIGHT** questions printed in both English and Hindi in TWO Parts.
आठ प्रश्नों को दो भागों में विभाजित किया गया है जो कि अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में छपे है ।

2. Candidate has to attempt **(06) SIX** questions in all either in English or Hindi by choosing at least **(03) THREE** questions from each part.
उम्मीदवार को कुल छ: प्रश्नों के उत्तर अंग्रेजी या हिन्दी में देने हैं । प्रत्येक भाग से कम से कम तीन प्रश्नों के उत्तर देने होगें ।

3. All questions carry equal marks. Each question will consist of 04 sub parts having 05 marks and word limit will be 150 words for each sub-part.
सभी प्रश्नों के समान अंक हैं । प्रत्येक प्रश्न के चार उप भाग होंगे तथा प्रत्येक उप भाग के 05 अंक होंगे ।

4. Write answers in legible handwriting. Illustrate your answers with suitable sketches, diagrams and figures, wherever considered necessary.
सुपाठ्य लिखावट में उत्तर लिखिए । जहां भी आवश्यक समझा जाए, वहाँ अपने उत्तरों को उपयुक्त रेखाचित्रों, आरेखों और आंकड़ो के साथ स्पष्ट कीजिए ।

5. Each part of the question must be answered in sequence and in the same continuation.
प्रश्न के प्रत्येक भाग का उत्तर क्रमानुसार दिया जाए ।

6. Attempts of the questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in answer book must be clearly struck off.
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी । आंशिक रुप से दिए गए प्रश्नों के उत्तर को भी मान्यता दी जाएगी यदि उसे काटा नहीं गया हो । खाली छोड़े गए कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए ।

7. In case of bilingual papers, if there is any difference in English and Hindi version of the question, the English version shall be treated as correct and final.
द्विभाषी पेपर के मामले में, यदि प्रश्न के अंग्रेजी और हिंदी संस्करण में कोई अंतर है, तो अंग्रेजी संस्करण को सही और अंतिम माना जाएगा।

IMPORTANT NOTE: ANSWER ANY (03) THREE QUESTIONS FROM EACH PART.

महत्वपूर्ण नोट: **प्रत्येक भाग में से किन्हीं** (03) **तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

PART – I (भाग – I) **(60 Marks)**

Q. No. 1: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. Describe the role of doshas in the process of disease development as to whether they are Samvayi, asamvayi or Nimitta karana of diseases, giving suitable logic and clinical examples.
रोगोत्पत्ति प्रक्रिया में दोषों की संवायी , असंवायी या निमित्त कारणके रूप में भूमिका का उपयुक्त तर्क और वैद्यकीय उदाहरण देकर वर्णन करें।

B. Explain the clinical significance of dosha movement from koshtha to shakha and vice versa in disease genesis and treatment with clinical illustrations.
दोषों का कोष्ठ से शाखा और शाखा से कोष्ठ में गमनकारोगोत्पत्ति एवं चिकित्सा में महत्व को उदाहरण के साथ समझाएं।

C. Elaborate on the clinical implications of Dosha dushya sammurchhana with examples.
दोष दूष्य सम्मूर्च्छना के महत्व को सउदाहरण वर्णित करें।

D. Explore the clinical relevance of Vikaravighatakarabhava abhava prativishesha with clinical example.
विकारविघातकरभाव अभाव प्रतिविशेष की नैदानिक प्रासंगिकता का वैद्यकीय उदाहरण देते हुए अन्वेषण करें।

Q. No. 2: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. Examine the clinical significance of the ‘chaturvidha Hetu classification’ in disease genesis, prognosis determination, and treatment planning, citing relevant examples.
प्रासंगिक उदाहरणों के माध्यम से रोग उत्पत्ति, प्रोग्नोसिस निर्धारण और उपचार नियोजन में 'चतुर्विध हेतु वर्गीकरण' के चिकित्सकीय महत्व को बताएं।

B. Define Ama and its role in disease pathogenesis and treatment planning, providing two classical examples.
आम को परिभाषित करते हुए रोगोत्पत्ति और उपचार योजना में इसकी भूमिका का दो शास्त्रीय उदाहरण देते हुए वर्णन करें ।

C. Explain the practical aspects of Kriyakala.
क्रियाकाल के व्यावहारिक पक्ष का वर्णन करें ।

D. Differentiate between Upadrava and Vyadhi Sankara with examples from current scenario.
वर्तमान परिदृश्य के उदाहरणों का उपयोग करते हुए उपद्रव और व्याधि संकर के बीच अंतर स्पष्ट करें।

Q. No. 3: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. Write the Ayurveda interpretation of ‘Irritable bowelsyndrome’
‘इरिटेबल बोवेल सिंड्रोम’ की आयुर्वेद व्याख्या लिखें।

B. Detail the disease Amavata from Ayurveda and contemporary perspective.
आयुर्वेद एवं समसामयिक परिप्रेक्ष्य में आमवात रोग का विस्तार से वर्णन करें।

C. Explain Raktapitta in terms of Ayurveda and contemporary understanding.
आयुर्वेद और समसामयिक आधार पर रक्तपित्त की व्याख्या करें।

D. Describe the disease diabetes mellitus from Ayurveda perspective in terms of etiological factors, pathogenesis, and clinical features.
हेतु, सम्प्राप्ति एवं लक्षण के संदर्भ में आयुर्वेद के दृष्टिकोण से मधुमेह रोग का वर्णन करें।

Q. No. 4: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. Conduct a scientific analysis of Chhidrodara and Jalodara, focusing on etiological factors, clinical manifestations, and treatment principles.
हेतु, लक्षण एवं उपचार सिद्धांतों के संदर्भ में छिद्रोदर और जलोदर का वैज्ञानिक विश्लेषण करें।

B. Discuss Ayurvedic perspectives on Psoriasis, including its various subtype presentations.
सोरायसिस एवंउसके विभिन्न उपप्रकार प्रस्तुतियों पर आयुर्वेद दृष्टिकोण से चर्चा करें।

C. Detail the differential diagnosis of Gridhrasi from a contemporary standpoint.
समसामयिक दृष्टिकोण से गृध्रसी के सापेक्ष (विभेदक) निदान का विवरण दें।

D. Describe the Ayurveda principles for the diagnosis and management of newly emerging diseases, using a contemporary example.
नए उत्पन्न रोगों के निदान और प्रबंधन हेतु प्रयुक्त आयुर्वेद सिद्धांतों का समसामयिक उदाहरण का उपयोग करते हुए वर्णन करें।

PART – II (भाग– II) (60 Marks)

Q. No. 5: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. What is the clinical relevance of Dashavidha pareeksha? Describe with suitable examples.
दशविध परीक्षा की नैदानिक प्रासंगिकता क्या है ? उपयुक्त उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

B. Explain the scientific approach behind Charakokta Anumana pareeksha.
चरकोक्त अनुमान परीक्षा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदाहरण देते हुए वर्णन करें।

C. Detail about the Ayurveda interpretation of liver function tests?
लिवर फंक्शन टेस्ट की आयुर्वेद व्याख्या को विस्तार पूर्वक बताएं?

D. Define biomarkers and discuss their relevance in clinical research, providing two examples.
बायोमार्कर को परिभाषित करें, और दो उदाहरण प्रदान करते हुए नैदानिक अनुसंधान में उनकी प्रासंगिकता पर चर्चा करें।

Q. No. 6: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. What is the concept of good clinical practice, and how is it implemented in Ayurveda?

गुड क्लिनिकल प्रैक्टिस की अवधारणा क्या है और इसे आयुर्वेद में कैसे लागू किया जाता है?

B. Explain the clinical examples of Sparshana pareeksha elucidating their scientific basis.
विभिन्न रोगों के नैदानिक उदाहरण देते हुए स्पर्शन परीक्षा की विस्तार से व्याख्या करें।

C. What is Prashna pareeksha, and what clinical importance does it hold?
प्रश्न परीक्षा क्या है और इसका क्या नैदानिक महत्व है?

D. Discuss the scientific relevance of Srotas pareeksha in Ayurveda.
स्रोतस परीक्षा की आयुर्वेद में वैज्ञानिक प्रासंगिकता पर चर्चा करें।

Q. No. 7: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. Detail the disease Shotha from a contemporary perspective.
समसामयिक परिप्रेक्ष्य से शोथ रोग का विवरण दीजिए।

B. Describe Ayurvedic perspectives on communicable diseases, including examples.
संचारी रोगों के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण का उदाहरण सहित वर्णन करें।

C. Explain the Ayurveda concept of homeostasis.
होमियोस्टैसिस की आयुर्वेद अवधारणा को समझाइए।

D. Explain neoplasia with reference to Ayurveda perspective.
आयुर्वेद परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में अर्बुद की व्याख्या करें।

Q. No. 8: Describe the following.
निम्न लिखित का वर्णन करें।

A. Write about the interpretation of X rays as per Ayurveda understanding?
आयुर्वेद दृष्टिकोण से एक्स रे की व्याख्या करें।

B. How does Ayurveda interpret environmental diseases, and what approaches does it suggest for prevention and treatment?
पर्यावरणजन्य रोगों की व्याख्या आयुर्वेद कैसे करता है, और रोकथाम एवं उपचार के लिए क्या दृष्टिकोण सुझाता है ?

C. What is the scientific understanding of Krimi Vigyan in Ayurveda? Explain with illustrative examples.
आयुर्वेद में कृमि विज्ञान की अवधारणा के वैज्ञानिक परिपेक्ष्य को उदाहरण सहित समझाइये।

D. Explore genetic diseases through both conventional and Ayurvedic perspectives, offering examples.
आनुवंशिक रोगों का पारंपरिक चिकित्सा और आयुर्वेद के दृष्टिकोण के माध्यम से उदाहरण देते हुए वर्णन करें।